IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 27, Issue 3, Series 1 (March, 2022) 75-82
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

कविता संबंधी बहसों के आईने में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी और आचार्य रामचंद्र शुक्ल

डॉ० निर्मला सिंह
(एसोसिएट प्रोफेसर)
मर्यादा पुरुषोत्तम महाविद्यालय
रतनपुरा, मऊ
(उत्तर-प्रदेश)

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जागरण सुधार युग की विभूति थे। द्विवेदी जी केवल भाषा की एकरूपता को ही स्थापित नहीं किया बल्कि ब्रजभाषा की जगह पर खड़ी बोली को स्थापित किया तथा कविता के कथ्य, शैली और संवेदना पर द्विवेदी जी के मौलिक विचार थे। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी उपयोगितावादी थे। यही उपयोगितावाद को वे हिंदी साहित्य में भी लेकर आते हैं। लगता है यह उपयोगितावादी प्रभाव उन पर प्लेटो का पड़ा है। प्लेटो घोर उपयोगितावादी एवं नैतिकतावादी था। ऐसे ही महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के साहित्य के केंद्र में नैतिकता है। द्विवेदी जी रीतिकाल की श्रृंगारिकता से ऊब चुके थे।इसीलिए वे कविता के अंगों पर नए ढंग से सोचने के पक्षपाती रहे है। आचार्य केशवदास जी का काव्य संबंधी आदर्श." भूषण बिन न बिराजई कविता बनिता मित्त" वाली कहावत से द्विवेदी जी की कविता एकदम भिन्न प्रकार की है। आचार्य द्विवेदी जी का कविता संबंधी मापदंड 'कवि कर्तव्य' नामक निबंध में है ।वही आचार्य रामचंद्र शुक्ल कविता पर एक बड़ा निबंध लिखते हैं जिसमें कविता संबंधी उनकी पूरी अवधारणा दी गई है। यह एक अद्भुत निबंध है। यदि कोई व्यक्ति उनके कविता संबंधी विचार जानना चाहता है, तो उसे 'कविता क्या है ?' नामक निबंध पढ़ना होगा। पहले हम आचार्य द्विवेदी जी की काव्य संबंधी अवधारणा देखते हैं। द्विवेदी जी कविता के लिए छंद के बंधन आवश्यक नहीं मानते हैं। वे केवल छंद बद्ध रचना को काव्य कहना पसंद नहीं करते हैं। उनके अनुसार काव्य छंद बद्ध भी हो सकता है। तथा बिना छंद के भी काव्य हो सकता है, वह पिंगल शास्त्र के नियमों को आवश्यक नहीं मानते। हम देखते हैं कि आचार्य जी कविता के नियमों को लेकर काफी उदार थे। उन पर पाश्चात्य विद्वानों का भी प्रभाव रहा है। जिसको आप आचरण में भी लाए। आप रीतिवादी ढांचे से ऊब चुके थे। इसी ऊब का परिणाम यह हुआ कि उन्होंने रीतिवादी आवरण बिल्कुल ही त्याग दिये।

छंद के विषय में द्विवेदी जी कहते हैं कि. "गद्य और पद्य दोनों में कविता हो सकती है। यह समझना अज्ञानता की पराकाष्ठा है कि जो कुछ छंद बद्ध है सभी काव्य है।"[1] आचार्य द्विवेदी जी कहते हैं कि कविता के लिए काव्य गुणों का होना आवश्यक है। गद्य या पद्य का होना बिल्कुल नहीं। कविता

गद्य पद्य दोनों में हो सकती है। हिंदी भाषा में पदान्त में अनुप्रास का होना आवश्यक माना जाता रहा है । जबकि हिंदी की मां संस्कृत में यह बाध्यता नहीं है। साथ ही अंग्रेजी और बांग्ला में भी इस तुकबंदी का चलन नहीं है। द्विवेदी जी मानते थे कि तुकबंदी से अत्यधिक मानसिक बोझ बढ़ेगा तथा सही भाव का संपादन भी नहीं हो पाएगा। इसीलिए तुकबंदी निरर्थक है। द्विवेदी जी की भाषा में "पदान्त में अनुप्रासहीन छंद भी हिंदी में लिखे जाने चाहिए। इस प्रकार के छंद जब संस्कृत और बांग्ला में विद्यमान हैं, तब कोई कारण नहीं कि हमारी भाषा में वे न लिखे जाएं" "संस्कृत ही हिंदी की माता है। संस्कृत का सारा कविता साहित्य इस तुकबंदी के बखेड़े से बहिर्गत. सा है।"[2] द्विवेदी जी का मानना है कि अनुप्रास के झमेले में न पढ़ने से कविता में सहजता आती है। अतिरिक्त परिश्रम से बचा जा सकता है।इच्छित अर्थ व्यक्त करने में सरलता होती है। आचार्य द्विवेदी जी का मानना है कि हिंदी में संस्कृत के छंद मे भी कविता होनी चाहिए, जिससे हिंदी भाषा की शोभा बढ़ेगी। द्विवेदी जी कविता की भाषा की सरलता पर विशेष बल देते हैं, साथ ही तुलसी और बिहारी का उदाहरण देते हैं कि उनकी कविता सरस थी तभी एक बड़े जनसमूह के कंठ का हार बन सकी। उन्हीं की भाषा में -

"यदि कविता सरस और मनोहारी है, तो चाहे वह एक ही अथवा बुरे से बुरे छंद में क्यों ना होए उससे आनंद अवश्य ही मिलता है।तुलसी ने चौपाई और बिहारी लाल ने दोहा लिखकर ही इतनी कीर्ति संपादन की।"[3]

अब हम आचार्य द्विवेदी जी का भाषा संबंधी विचार लेते हैं। यह हम पहले ही कह चुके हैं कि आचार्य जी पर पाश्चात्य विद्वानों का गहरा प्रभाव पड़ा है। जिसमें विलियम शेक्सपियर की भाषा संबंधी मान्यता थीए कि गद्य एवं पद्य की भाषा में एकरूपता होनी चाहिए दोनों की भाषाएं अलग अलग होना आचार्य जी को खटखटा था। इसीलिए गद्य एवं पद्य की भाषा एक होनी चाहिए। इस पर द्विवेदी जी ने जोर दिया है। इस संबंध में डॉ रवींद्र सहाय वर्मा ने लिखा है-

"वर्ड्सवर्थ के लिरिकल बैलेड्स की भूमिका में दिए हुए काव्य सिद्धांत के अनुरूप ही उन्होंने गद्य और पद्य की भाषा के एक होने, छोटे से छोटे विषय पर काव्य रचना करने तथा काव्य को अनुभूति प्रदान बनाने की बात कही है।"[4]

आप हर प्रकार भाषा की जटिलता से बचना चाहते थे। आप ऐसी भाषा के हिमायती थे; जो सहज, सरल और सबके समझ में आने वाली हो। यही भाषा की सहजता उन्होंने अपनी सरस्वती पत्रिका के माध्यम से लोगों तक पहुंचाया और अन्य कवियों को हिदायत दी कि वे भाषा की सहजता को अपनाएं। उन्हीं की भाषा में -

"कवि को ऐसी भाषा लिखनी चाहिए जिसे हर कोई सहजता से समझ ले और अर्थ को हृदय अंगम कर सके।"[5]

द्विवेदी जी का मानना है कि कविगण जो भाव अपनी भाषा के माध्यम से व्यक्त करते हैं, वे भाव ठीक उसी रूप में पाठकगण भी अनुभूत कर सके। जिन कवियों की भाषा दुरूह है, उन कवियों के भाव भी

समझने में कठिनाई होती है। ऐसी ही दुरूह भाषा शैली वाली कविताएं पढ़ने को मन नहीं करता। ऐसे ही ऊबाऊ काव्य जल्द ही कालकवलित हो जाते हैं। उन्हीं की भाषा में -

"जो कुछ लिखा जाता है, वह इसी अभिप्राय से लिखा जाता है कि लेखक का हृदगत भाव दूसरे समझ जाए। यदि इस उद्देश्य की ही सफलता न हुई तो लिखना ही व्यर्थ हुआ"[6]

द्विवेदी जी का मानना है कि साहित्य का अर्थ रसपूर्ण होना चाहिए। तभी लोगों की रुचि साहित्य को पढ़ने में लगेगी। जिस रस का कवि वर्णन कर रहा हैए पहले उस रस को आत्मसात करें; फिर उसका वर्णन इस प्रकार करें, जिसका साधारणीकरण पाठक आसानी से कर सके। अलंकारों को जबरन लाने की कोशिश न करें। इससे साहित्य में भद्दापन आता है। आचार्य द्विवेदी जी का कथन है कि-

"अर्थ सौरस्य ही कविता का प्राण है। जिस गद्य में अर्थ का चमत्कार नहीं,वह कविता नहीं। कवि जिस विषय का वर्णन करें उस विषय से उसका तादात्म्य हो जाना चाहिए।×××××××××× कविता करने में, हमारी समझ में अलंकारों को बलात् लाने का प्रयत्न न करना चाहिए"[7]

'कवि. कर्तव्य' नामक निबंध के अंतिम भाग में कविता के विषय के संबंध में विचार करते हैं। रीतिकालीन कविता से द्विवेदी जी का मोहभंग हो चुका था। अब वे रीतिकालीन श्रृंगारिकता को फूटी आंखों भी नहीं देखना चाहते थे। उन्होंने अपनी सरस्वती पत्रिका के माध्यम से नवोदित कवि भी तैयार किए तथा नए कथ्य पर कविता लिखने का सुझाव दिया। जो उपेक्षित पात्र रहे हैं, उन्हें प्रकाश में लाने का सुझाव दिया। कविता के कथ्य के विषय में आप का कहना है कि कविता कथ्य रुचिकर होना चाहिए साथ ही उससे कोई न कोई शिक्षा भी मिलनी चाहिए। अब स्वकीया तथा परकीया पर पहेली बुझाने की जरूरत नहीं रही है। अब तक बहुत रास रचाए जा चुके हैं। अब रास रचाने की जरूरत नहीं रही है। कविता करने के लिए संसार में ढेर सारे शीर्षक हो सकते हैं, जिन पर कविता करके मनोरंजन तथा शिक्षा मिल सकती है। आपकी ही प्रेरणा से ढेर सारे कवि तैयार हुए, जिन्होंने नूतन शीर्षक लेकर काव्य रचे और वे खूब सराहे गए। कविता के विषय के संबंध में आचार्य द्विवेदी जी कहते हैं कि.

"कविता का विषय मनोरंजक और उपदेश जनक होना चाहिए। यमुना के किनारे-किनारे केलि-कौतूहल का अद्भुत वर्णन बहुत हो चुका। न परकीयाओ पर प्रबंध लिखने की अब कोई आवश्यकता है और न स्वकीयाओ के 'गतागत' की पहेली बुझाने की। चींटी से लेकर हाथी पर्यंत पशु;भिक्षुक से लेकर राजा पर्यंत मनुष्य; बिंदु से लेकर समुद्र पर्यंत जल; अनंत आकाश; अनंत पृथ्वी; अनंत पर्वत सभी पर कविता हो सकती है; सभी से उपदेश, सभी के वर्णन से मनोरंजन हो सकता है। फिर क्या कारण है कि इन विषयों को छोड़कर कोई कोई. कोई कवि स्त्रियों की चेष्टा का वर्णन करना ही कविता की चरमसीमा समझते हैं?"[8]

आपका कहना है कि कवि ऐसे भाव व्यक्त करें जिसे पाठक आसानी से आत्मसात कर सके। पाठक भी सहृदय होना चाहिए। लोकप्रिय कविता की आपने पांच विशेषताएं बताई हैं। जो निम्नलिखित हैं

.

1.कविता में साधारण लोगों की अवस्था, विचार और मनोविकारों का वर्णन हो।

2. उसमे धीरज, साहस, प्रेम और दया आदि गुणों के उदाहरण रहे।

3. कल्पना सूक्ष्म और उपमादिक अलंकार गूढ़ न हों।

4. भाषा सहज, स्वाभाविक और मनोहर हो।

5. छंद सीधा, परिचित, सुहावना और वर्णन के अनुकूल हो।

इस प्रकार महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने रस, छंद, अलंकार, भाषा और अर्थ तथा कथ्य के विषय में मौलिक विचार व्यक्त किए हैं। कविता संबंधी उक्त अवधारणा 'कवि कर्तव्य' नामक निबंध में दी है।

अब हम आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी की कविता संबंधी मान्यताओं को देखते हैं,और यह समझते हैं कि आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी से किस प्रकार भिन्न हैं। शुक्ल जी का कविता पर एक बड़ा लंबा चौड़ा निबंध है, जिसका शीर्षक है 'कविता क्या है?' आचार्य शुक्ल जी की कविता संबंधी समस्त अवधारणा इसी निबंध में दी हुई हैं। कविता पर लिखा हुआ शुक्ल जी का यह अद्भुत निबंध है। उन्होंने इस निबंध में कविता के समस्त पहलुओं पर बहुत विस्तृत विचार किया गया है। इस निबंध में कविता पर बहुत सारगर्भित तरीके से विचार किया गया है। इस निबंध को शुक्ल जी ने कई बार लिखा और संशोधित भी करते रहे। समय.समय पर आपके काव्य संबंधी जो विचार बदलते रहे तथा बदले विचार के अनुसार निबंध को संशोधित करते रहे। इसीलिए इस निबंध के कई पाठ मिलते हैं। इस निबंध के तीन पाठ तो मेरे पास हैं। यदि कोई व्यक्ति शुक्ल जी की कविता संबंधी मान्यताओं को जानना चाहता है, तो उसे इस निबंध को पढ़ना होगा। अब हम आचार्य द्वय की कविता संबंधी परिभाषा देखते हैं, सर्वप्रथम आचार्य पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा दी गई परिभाषा इस प्रकार है.

"अंत:करण की वृत्तियों के चित्र का नाम कविता है।" "कविता प्रभावशाली रचना हैए जो पाठक या श्रोता के मन पर आनंददायी प्रभाव डालती है।"

"सादगी, असलियत और जोश यदि यह तीनों गुण कविता में हो तो कहना ही क्या हैं?"[9]

हिंदी के मूर्धन्य विद्वान पंडित रामचंद्र शुक्ल ने विशद् विश्लेषण पूर्वक कविता की परिभाषा करते हुए लिखा है.

"जिस प्रकार आत्मा की मुक्त अवस्था ज्ञान दशा कहलाती है; उसी प्रकार हृदय की यह मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है।हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द.विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं। इस साधना को हम भाव योग कहते हैं और कर्म योग और ज्ञान योग के समकक्ष मानते हैं।"[10]

अगर हम आचार्य द्वय की कविता संबंधी परिभाषा लेते हैं तो देखते हैं कि द्विवेदी जी की भाषा बहुत हल्की और सही प्रतीत होती है। वही शुक्ल जी की भाषा शैली कितनी कसी हुई है कहने की आवश्यकता नहीं। आचार्य शुक्ल जी द्विवेदी जी की भाषा पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं कि.

"पर ये लेखन कला या सूक्ष्म विचार की दृष्टि से लिखे नहीं जान पड़ते। 'कवि और कविता' कैसा गंभीर विषय है कहने की आवश्यकता नहीं। पर इस विषय की बहुत मोटी.मोटी बातें बहुत मोटे तौर पर कही गई हैं।"[11]

आचार्य शुक्ल जी का निबंध श्कविता क्या है?' कई उपशीर्षकों में विभक्त है। इन्ही उपशीर्षकों के माध्यम से अपनी कविता संबंधी मान्यता व्यक्त करते हैं। यह निबंध तेरह उपशीर्षकों में विभक्त है।जिनका शीर्षक इस प्रकार है.

सभ्यता के आवरण और कविता, कविता और सृष्टि. प्रसार, मार्मिक तथ्य, कव्य और व्यवहार, मनुष्यता की उच्चभूमि, भावना या कल्पना, मनोरंजन, सौंदर्य, चमत्कारवाद, कविता की भाषा, अलंकार, कविता पर अत्याचार, कविता की आवश्यकता आदि उपशीर्षकों में विभक्त है।

इसी प्रकार द्विवेदी जी का निबंध 'कवि कर्तव्य' चार उपशीर्षक ओ में विभक्त है। जिसके उपशीर्षक छंद, भाषा, अर्थ और विषय हैं। आचार्य द्विवेदी जी के निबंध विचारात्मक कोटि में आते हैं। दोनों आचार्य रसवादी हैं। अब हम आचार्य शुक्ल जी की काव्य संबंधी अवधारणा का अध्ययन करते हैं। आचार्य द्विवेदी जी और आचार्य शुक्ल जी की काव्य संबंधी अवधारणाएं एक दूसरे से कई स्तरों पर भिन्न हैं। आचार्य शुक्ल जी कविता के तत्वो का बहुत बारीकी से विश्लेषण किया है। आचार्य शुक्ल जी का मानना है कि जैसे.जैसे लोग सभ्य होते जाएंगे तथा सहज प्राकृतिक भाव छुपाने में कुशल होते जाएंगे,तब उनको प्राकृतिक अवस्था में लाना कठिन हो जाएगा। व्यक्ति को उसके स्वार्थ संबंधों से मुक्त करने में कविता का बहुत बड़ा हाथ होता है। लेकिन सभ्य व्यक्ति पर सभ्यता का आवरण चढ़ जाने के कारण उसको मूल अवस्था में लाना कठिन हो जाता है। ऐसे व्यक्ति को प्राकृतिक अवस्था में लाने का काम कविता ही करती है। उन्हीं की भाषा में.

"ज्यों. ज्यों सभ्यता बढ़ती जाएगी त्यों.त्यों कविता के लिए यह काम बढ़ता जाएगा"[12]

आचार्य शुक्ल जी काव्य में बिम्ब योजना को महत्वपूर्ण मानते हैं।बिम्ब से पाठक के हृदय पर गहरा और स्थाई प्रभाव पड़ता है। शुक्ला जी का मानना है कि जो कवि मार्मिक तथ्यों के चुनाव में जितना सिद्धहस्त होगाए वह उतना बड़ा कवि माना जाएगा। इस संबंध में वो तुलसी का उदाहरण देते हैं। कविता मनुष्य जीवन पर गहरा प्रभाव डालती है तथा कर्म क्षेत्र में प्रवृत्त करती है। उन्हीं की भाषा में-

"भावों या मनोविकारों के विवेचन में हम कह चुके हैं कि मनुष्य को कर्म में प्रवृत्त करने वाली मूल वृत्ति भावात्मिता है।"[13]

शुक्ला जी कहते हैं कि जैसे-जैसे शिक्षा व्यवस्था बढ़ती जाएगी। मनुष्य के ज्ञान का स्तर ऊंचा होता जाएगा। वैसे.वैसे मानव का भावात्मिका वृत्ति का प्रसार होता जाएगा। हम काव्य को जब पढ़ते हैं तब अपने स्वार्थ संबंधों से मुक्त हो जाते हैं। अन्यायी पर हम क्रोध कहते हैं तथा न्याय करने वाले पर हम मुग्ध होते हैं। यह करामात काव्य द्वारा ही संभव है। काव्य ही हमारी उदासीनता, मलीनता को दूर कर, जोश भरने का काम करता है। जब हम आल्हा सुनते हैं तब हमारे अंदर वीरता वाले गुण आते हैं तथा जब हम श्रृंगार की कविता सुनते हैं तब हमारे अंदर रागात्मक भाव जगते हैं अर्थात् जिस भाव का काव्य सुनते या पढ़ते हैं वही भाव जगता है। उसे कर्म मार्ग में प्रवृत्त करता है। कविता बहुत काम की चीज है। प्राचीन काल से लेकर आज तक हर समाज में कविता पाई जाती है। मनुष्य को उसके मूल रूप में लाने का काम कविता करती है। शुक्ला जी की भाषा में.

"मनुष्य में ज्ञान प्रसार के साथ.साथ भाव प्रसार भी बढ़ता गया है।××××××××××। कवि वाणी के प्रसार से हम संसार के सुख.दुख, आनंद क्लेश आदि का शुद्ध स्वार्थमुक्त रूप में अनुभव करते हैं।××××××××××। कविता ही हृदय को प्रकृत दशा में लाती है और जगत के बीच क्रमशः उसका अधिकाधिक प्रसार करती हुई उसे मनुष्यत्व की उच्च भूमि पर ले जाती है।"[14]

काव्य का एक बड़ा तत्व कल्पना का होता है। अतः कवि कल्पना करने में प्रवीण होना चाहिए, इसी कल्पना को साहित्य जगत में भावना भी कहते हैं। हमेसा कविता मनोरंजन की वस्तु समझी जाती रही है, पर महावीर प्रसाद द्विवेदी जी कविता को मनोरंजन के साथ लोककल्याणकारी भी मानते हैं अर्थात अच्छे उपदेशों का समावेश भी कविता में होना चाहिए। आश्चर्य शुक्ल कविता का अंतिम लक्ष्य मनोरंजन को नहीं माना है। उन्होंने कविता का अंतिम लक्ष्य गोचर जगत के मार्मिक स्थलों के साथ मनुष्य हृदय का सामंजस्य स्थापित करना माना है। उन्हीं की भाषा में.

"प्रायः सुनने में आता है कि कविता का उद्देश्य मनोरंजन है। पर जैसा कि हम पहले कह आए हैं; कविता का अंतिम लक्ष्य जगत के मार्मिक पक्षों का प्रत्यक्षीकरण करके उनके साथ मनुष्य हृदय का सामंजस्य स्थापन है।"[15]

आगे शुक्ला जी सौंदर्य भावना पर विचार करते हैं; और सौंदर्य को आप बाहर की वस्तु नहीं मानते हैं। पाश्चात्य काव्य जगत में कुछ विद्वान सौंदर्य को अंदर. बाहर करके भ्रम की स्थिति पैदा की है। आप सौंदर्य को मन के भीतर की वस्तु मानते हैं। आपके ही शब्दों में.

"सौंदर्य बाहर की कोई वस्तु नहीं है, मन के भीतर की वस्तु है।××××××××××।जैसे वीर कर्म से पृथक वीरत्व कोई पदार्थ नहीं वैसे ही सुंदर वस्तु से प्रथक सौंदर्य कोई पदार्थ नहीं।"[16]

काव्य में चमत्कार को आप अच्छा नहीं मानते हैं। इसी चमत्कार के कारण आप केशवदास के साथ में न्याय नहीं कर पाए हैं। केशवदास जी के पंडित प्रदर्शन में चमत्कार का बड़ा हाथ है। चमत्कार के केंद्र में शब्द क्रीडा होती है। चमत्कार प्रदर्शन से काव्य का लक्ष्य जो रस में डूबने का होता है वह खत्म हो जाता है। यदि कहीं सहज चमत्कार आ जाए तो उससे कोई दिक्कत नहीं, लेकिन उसको जबरन न लाया जाए। चमत्कार के संबंध में आप का मत है कि.

"चमत्कार मनोरंजन की सामग्री है, इसमें संदेह नहीं, इसमें जो लोग मनोरंजन को ही का विकास समझते हैं, वे यदि कविता में चमत्कार ही ढूंढा करें तो कोई आश्चर्य की बात नहीं।"[17]

कविता की भाषा के संबंध में शब्द चयन की बहुत बड़ी भूमिका होती है। रस के अनुकूल शब्दों का चयन होना चाहिए। यही शब्द चयन कवि की प्रतिभा को दर्शाता है। जो जितना महान कवि होगा उसका शब्द चयन उतना ही विशेष होगा। शास्त्रों के पारिभाषिक शब्द लाने से काव्य में अप्रतीत्व दोष आता है। अर्थ की स्पष्टता में कमी आती है। कविता दुरूह हो जाती है तथा दीर्घ जीवी नहीं रहती है। काव्य में नांद-सौंदर्य की बहुत बड़ी भूमिका होती है, कविता को दीर्घ जीवी बनाने में। इसी नांद.सौंदर्य के बल पर काव्य लोगों के कंठ का हार होता है। जिन तत्वों के योग से कविता अपनी पूर्णता प्राप्त करती हैं, उनमें नांद. सौंदर्य भी है। नाद.सौंदर्य के संबंध में आप का एक महत्वपूर्ण कथन है कि.

"नाद.सौंदर्य से कविता की आयु बढ़ती है"[18]

काव्य का पूर्ण स्वरूप खड़ा करने में अलंकार का अपना महत्वपूर्ण है। काव्य में वर्णित वस्तु का भाव बोध तीव्र कराने के लिए काम में ली जाने वाली युक्ति अलंकार ही है। अलंकार के द्वारा हम किसी वस्तु को कम या ज्यादा करके पाठक तक पहुंचाते हैं। इसके द्वारा हम कविता को प्रभावशाली बनाते हैं। लेकिन यह हमेशा याद रखना चाहिए कि अलंकार काव्य के शोभावर्धक तत्व हैं। अलंकार को साध्य मान लेने से काव्य भद्दा हो जाता है। उसकी स्वाभाविकता खो जाती है। वर्णन के अनुकूल ही अलंकारों का प्रयोग होना चाहिए, सप्रयास अलंकारों का प्रयोग करने से बचना चाहिए। अलंकार स्वाभाविक होना चाहिए। शुक्ल जी के शब्दों में.

"जिस प्रकार एक कुरूप स्त्री अलंकार लादकर सुंदर नहीं हो सकती, उसी प्रकार प्रस्तुत या तथ्य की रमणीयता के अभाव में अलंकार का ढेर काव्य का सजीव स्वरूप नहीं खड़ा कर सकता।"[19]

निबंध के अंत में कविता की आवश्यकता पर विचार किया गया है। कविता हर मानव समाज में पाई जाती है। चाहे वह सभ्य समाज हो या असभ्य हो, कविता की मौजूदगी जरूर होगी। चाहे अन्य विषय भले ही न हो जैसे इतिहास, भूगोल, विज्ञान, दर्शन ।लेकिन कविता होगी। कविता के प्रयोजन के संबंध में निबंध की अंतिम पंक्तियां इस प्रकार हैं.

ष्इसी की अंतःप्रकृति में मनुष्यता को समय.समय पर जगाते रहने के लिए कविता मनुष्य जाति के साथ लगी चली आ रही है और चली चलेगी। जानवरों को इसकी जरूरत नहीं।"

इस प्रकार कविता संबंधी बहसों के आईने में हमने आचार्य द्वय की मान्यताओं का विश्लेषण किया। इस लेख के माध्यम से किसी आचार्य को एक दूसरे से कम या ज्यादा आंकने का लक्ष्य नहीं था। बस काव्य संबंधी उनकी मान्यताओं का उद्घाटन करना था।

संदर्भ ग्रंथ सूची.

1. 'कवि-कर्तव्य' - महावीर प्रसाद द्विवेदी
2. 'कभी-कर्तव्य' -महावीर प्रसाद द्विवेदी
3.ृकवि-कर्तव्य' - महावीर प्रसाद द्विवेदी
4. हिंदी का गद्य साहित्य-डॉ० रामचंद्र तिवारी,पृष्ठ 498
5. 'कवि.कर्तव्य' - महावीर प्रसाद द्विवेदी
6. कवि.कर्तव्य -महावीर प्रसाद द्विवेदी
7. 'कवि-कर्तव्य' -महावीर प्रसाद द्विवेदी
8. 'कवि-कर्तव्य' महावीर प्रसाद द्विवेदी
9. काव्यशास्त्र. भारतीय एवं पाश्चात्य -डॉ०कन्हैयालाल अवस्थी डॉ० अमित अवस्थी.पृष्ठ-5
10.कविता क्या है- चिंतामणि भाग-1
11. हिंदी साहित्य का इतिहास.आचार्य रामचंद्र शुक्ल 12.कविता क्या है. चिंतामणि भाग- 1

13.कविता क्या है -चिंतामणि भाग- 1

14.कविता क्या है -चिंतामणि भाग- 1

15.कविता क्या है- चिंतामणि भाग -1

16.कविता क्या है -चिंतामणि भाग -1

17.कविता क्या है- चिंतामणि भाग -1

18.कविता क्या है- चिंतामणि भाग -1

19 कविता क्या है- चिंतामणि भाग-1

20.कविता क्या है- चिंतामणि भाग -1